International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 9 Issue 4, July-August, 2021, Impact Factor: 7.326

नासिरा शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सोनिया[1], डॉ. कमला कौशिक[2]

[1]शोधार्थी, हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा
[2]प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा

सार

आज के दौर में नासिरा शर्मा ही एक ऐसी लेखिका प्रमाणित हुई है जिन्होंने विभिन्न परिवेश के समय और समाज, देश–देशांतर की सामाजिक सोच व ताने–बाने को ईमानदारी और सफलता से प्रस्तुत किया है । अक्षयवट, कुइयांजान नासिरा के वे उपन्यास हैं जो समाज के विभिन्न तबकों के पात्रों को सजीवता से चित्रित करते हुए मूलभूत समस्याओं यथा, क्रमशः युवा वर्ग की समस्या एवं जल समस्या पर केन्द्रित हैं जबकि शाल्मली और ठीकरे की मंगनी उपन्यास क्रमशः पढ़ी–लिखी नगरीय महिला तथा रुढ़िग्रस्त समाज की कूपमंडूपता की काल–कोठरी में कैद स्त्री की मनोदशा और इस मनोदशा से बाहर निकलने की जद्दोजहद को रुपायित करते हैं ।

जीवन वृत एवं व्यक्तित्व

नासिरा शर्मा जी को एक लेखिका के रूप में जानने व समझने के लिए उनके द्वारा लिखा गया साहित्य दपर्ण का कार्य करता है, क्योंकि प्रत्येक साहित्यकार का व्यक्तित्व किसी–न–किसी रूप में अपने जीवन और समाज से प्रभावित तथा प्रेरित होता है। उसके साहित्य में गतिशील रहने के प्रेरक तत्त्व विद्यमान होते हैं। नासिरा शर्मा जी तो अपनी रचनाओं की भूमिकाओं में इतनी स्पष्ट हैं कि उन्हें कहीं अन्यन्त्र ढूँढने की आवश्यकता ही नहीं है। उनके जीवन की सादगी, सहजता, सौम्यता, तत्परता और मानव मूल्यों के प्रति विकसित अवस्था उनके साहित्य में पल्लवित हुई है। अन्त में कहा जा सकता है कि नासिरा जी का कृतित्व ही उनका व्यक्तित्व है और व्यक्तित्व ही कृतित्व है। वैसे तो नासिरा शर्मा के जीवन के बारे में बहुत कम लिखा गया है। स्वयं भी उन्होंने अपने जीवनवृत को लेकर कुछ नहीं लिखा है, न ही वे इसे आवश्यक मानती हैं। उपलब्ध सामग्री और उनके साहित्य के आधार पर जितनी जानकारी मिली उसके आधार पर उनके जीवन एवं व्यक्तित्व का विवेचन इस प्रकार प्रस्तुत किया है।

जीवन परिचय

आधुनिक हिन्दी महिला साहित्यकारों में प्रमुख स्थान रखने वाली नासिरा शर्मा जी का जन्म इलाहाबाद उत्तर प्रदेश की पावन धरती पर हुआ। एक सम्पन्न मुस्लिम सिया परिवार में शुक्रवार 22 अगस्त 1948 ई० को प्रातरू 4 बजे नासिरा के रूप में एक कन्या ने प्रवेश किया। यह अपने परिवार में सबसे छोटी थी। इनके पैदा होने पर घर वाले बहुत खुश हुए थे।

घर में सबसे बहुत लाड–प्यार में बीता। बचपन में भी वह दो टूक बातें करती थी, किसी से भी सच्ची खरी बात कहने की हिम्मत थी

शिक्षा और कार्यक्षेत्र

नासिरा शर्मा की शिक्षा का प्रारम्भ घर से ही हुआ है, वे अपनी माँ को ही अपना प्रथम गुरु मानती हैं। उनकी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा इलाहबाद में कान्वेंट में हुई। उन्होंने बी०ए० की पढ़ाई इलाहबाद विश्वविद्यालय

से पूरी की। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से फारसी भाषा साहित्य में एम०ए० की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और पश्तों भापा पर उनकी गहरी पकड़ है। ईरान उनके साहित्यिक शोध का विषय रहा है। औपचारिक शिक्षा के साथ उन्हें व्यवहारिक शिक्षा भी मिली। ईरान समाज की राजनीति, संस्कृ ति, साहित्य काल–विपयों की भी ये विशेषज्ञ हैं। शिक्षा इनके लिए महज खानापूर्ति या नौकरी हेतु नहीं अपितु जीवन से जुड़ी हुई थी। उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में फारसी भाषा और उर्दू अध्यापन का कुशल कार्य किया। अपने लेखन कार्य की व्यस्तता और अध्ययन के लिए बाहरी देशों में जाने में होने वाली कठिनाईयों के कारण यह कार्य उन्होंने छोड़ दिया। आयानगर रेडियो स्टेशन पर भी वे कई माह तक प्रोग्राम ऑफिसर के रूप में सेवारत थी। पत्रकार होने के नाते वह कई जानी–मानी पत्र–पत्रिकाओं से स्थायी रूप से जुड़ी रही हैं। अब वह स्वतंत्र लेखन कर रही हैं।

लेखन का उद्देश्य

नासिरा शर्मा पाठकों को उकसाकर अपनी पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने की घटिया हरकतों से हमेशा दूर रही हैं। प्रसिद्धि और पैसों के लिए लिखना उन्हें मंजूर नहीं है। सेक्स को विपयधारा बनाकर पाठको को आकर्पित करने से वे परहेज करती हैं। इन्सान को इन्सान बने रहने पर प्रेरित करते रहना। अपमान, शोपण, अत्याचार के विरोध में खड़े होने की प्रेरणा देना। उनके लेखन का प्रमुख उद्देश्य रहा है। वे किसी भी इन्सान के विरोध में खड़ा होना नहीं चाहती हैं। वह सिर्फ बुराइयों की आलोचना करना चाहती हैं। उन्होंने उस व्यवस्था के खिलाफ अपना लेखन किया है जो इन्सान के अधिकारों का हनन करती हैं, इसमें चाहे पुरुप हो या स्त्री। आगे नासिरा शर्मा जी कहती हैं कि "मैं कहना चाहूंगी कि उत्पीड़न की समस्या है तो मैं नारी के साथ हूँ। अगर साहित्य का प्रश्न है तो मैं पुरुप के साथ हूँ अर्थात् मुख्यधारा में हूँ। आज साहित्य के स्थान पर बाजार को नजर में रखकर विज्ञापन के माध्यम से बेहद हल्के बनावटी और गैरजरूरी साहित्य को उछाला जा रहा है। इसके बड़े खतरनाक नतीजे सामने आ रहे हैं। इससे नई पीढ़ी संस्कारहीन हो रही है। आजकल संस्कारों को लेकर साहित्य में जानेवालों को साहित्य में स्थान नहीं मिल रहा है। ऐसी स्थिति में समाज जागृति परक लेखन के प्रति अपना रूझान रखना आदर्श समाज निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण पहल है।

व्यक्तित्व

सामान्यत: व्यक्ति का अर्थ शारीरिक सौन्दर्य अथवा शरीर की बाहा संरचना से लगाया जाता है। किसी भी व्यक्ति के बाहरी रूप या मुख्यतः चेहरे की सुन्दरता को देखकर अन्य व्यक्ति उसके व्यक्तित्व की प्रशंसा करने लगते हैं। शारीरिक सौन्दर्य या आकर्षण का निश्चय ही व्यक्तित्व के निर्माण में विशेष योगदान रहता है, परन्तु यह व्यक्तित्व का संकीर्ण अर्थ है। इसे व्यक्ति का बाहा स्वरूप ही कहा जा सकता है। कुछ व्यक्ति बाहरी रूप से कम सुन्दर व कम आकर्पक होने पर भी उनके विचार मनोवृत्तियाँ योग्यता, उच्चकोटि की होती है। अत: ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तित्व उच्च कोटि ही कहा जायेगा, क्योंकि मनोविज्ञान की दृष्टि से छवि की आन्तरिक योग्यताओं की अवेहलना नहीं की जा सकती।

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व मूलतः एक अबूझ पहेली होता है। व्यक्ति के निर्माण में अनुवंश और परिवेश की भूमिका अहं स्थान रखती है, इसी कारण विभिन्न व्यक्ति एक ही प्रसंग को विभिन्न कोणों से देखते है या उस प्रसंग पर उनका व्यवहार अलग–अलग होता है। साहित्य का सृजन जाने – अनजाने उसके व्यक्तित्व से गहरा ताल्लुक रखता है। इसी कारण किसी भी साहित्यकार के कृतित्व का अध्ययन करते हुए उसके व्यक्तित्व का अध्ययन भी महत्त्वपूर्ण है। व्यक्तित्व में व्यक्ति का न केवल बाहा रूप–रंग, पोशाखादि शामिल है, बल्कि उसकी सम्पूर्ण प्रकृति, स्वभाव, रूचि–अरूचि का तारम्य, प्रमुख इच्छाएँ व मूल प्रवृत्तियाँ, उसके विचार आदर्श और स्थायीभाव आदि सब कुछ उसमें सम्मिलित है।

स्वभाव

नासिरा शर्मा का स्वभाव संयमी, सरल और सादगी से भरा हुआ है। वह अपने घर आने वाले हर मेहमान का स्वागत हँसते हुए और खुशी से करती हैं, जिससे आपस की दूरी कम होती है। पल भर में सादगी और पलभर में गम्भीर्य उनकी स्वभावगत विशेषता है। वह निःस्वार्थ और स्वभाव से उदार हैं। वक्त और प्रतिभा को वह व्यर्थ

गँवाना नहीं चाहती। वह अपने घर के काम को बोझ न समझकर आन्तरिक मन की खुशी से करती हैं। अपने शौक के बारे में वे लिखती हैं, ष्मेरी जिन्दगी में ये नहीं रहा कि एक शौक है और मुझे पूरा करना है। शौक मेरी जिन्दगी में दुख और चुनौती बनकर कभी नहीं आया। मैं जिन्दगी के हर पड़ाव और मोड़ पर किसी न किसी काम में रूचि से जुड़ी रही। लेकिन ये जरूर मैंने पाया कि इन सारी रूचियों का अंतरूस्वर एक है। मेरा मीडिया भले ही बदलता रहा हो पर अंतःस्वर मूलतः एक ही रहा है। वह है दृ पढ़ना–लिखना। जबकि घर सजाना, खाना पकाना, सिलाई, एलबम विभिन्न शीर्पकों को लेकर बनाना आदि–आदि, यह सब समय के साथ पीछे छूटता चला गया। नासिरा जी अपनी शायरी विपयक शौक के बारे में लिखती हैं, ष्मैं गहा जरूर लिखती हूँ मगर मुझे शायरी पढ़ने का बहुत शौक है। शेर अब याद नहीं रखे जाते मगर उन्हें बार–बार पढ़ना,दोहराना उनके अर्थ को अपने तई सहेजना भला लगता है। इससे उनके कोमल हृदय एवं संवेदनशीलता का परिचय मिलता हैं।

नासिरा के लेखन

फलक की व्यापकता को देखते हुए, उससे अंतरंग होते हुए, सहमत असहमत होते हुए भी यह निरूसंकोच कहा जा सकता है कि वर्तमान अतीत बनकर जब हमारी कारगुजारियों को अपने में समेट दर्पण बनकर हमारे आचरणों को प्रतिबिम्बित करेगा, उन क्षणों में नासिरा की कहानियाँ उन सबके साथ जो सत्ता और राजनीति के घृणित खेल में वैमनस्य की तेज़ आँधियों के बीच इंसानियत की डोर को अपने काँपते हाथों में थामे रखने का प्रयास कर रहे हैं, नासिरा के ईमानदार रचना–कर्म और संतुलित जीवन एवं कथा–दृष्टि की समर्थ गवाह होंगी। विषय की विविधता, जीवन की नाना अनुभूतियों और चिंतन के विविध आयामों का बिना किसी बौद्धिक जड़ता के सहज स्पर्श नासिरा की लेखकीय क्षमताओं को विस्तार देते हैं । इंसानी दुःखों के कारणों को जानने और उसकी छटपटाहट को शब्द देने की बेचौनी समस्त लेखन का अटूट हिस्सा बनकर उभरती है, लगभग अनिवार्यता की शिद्दत के साथ ।

संभवतः इसीलिए ये बेचौनी और सम्बंधों की मानवीय परिणतियाँ कहीं–कहीं व्यंग्यात्मक मुद्रा अख्तियार कर लेती हैं, कहीं आक्रोश बनकर फट पड़ती हैं तो कहीं तटस्थ आलोचक बनकर जिन्दगी का परत–दर–परत विश्लेषण करने लगती हैं, बेबस और निस्सहाय होकर इन सारे चक्रव्यूहों के बीच घिरे व्यक्ति के दर्द का मूक गवाह बन जाती हैं और कहीं स्थितियों की स्थिरता–अस्थिरता सामाजिक दबावों, निश्चयों–अनिश्चयों से निकलकर या यूँ कहें कि दुनियावी जिन्दगी से हटकर श्मेरी जन्नत मुझे वापस दे दोश की चीख के साथ एक रूहानी जिन्दगी की तलाश में अपने को होम कर देने को आतुर दिखती हैं । मानवीय संवेदनाओं के बहुरंगी संसार को शब्द देने का पूर्ण सामर्थ्य अपने में समेटे नासिरा का लेखन उनकी साहित्यिक और रचनात्मक प्रतिभा का साक्षी है न कि उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का पहला अध्याय । रचनाकार के भीतर सृजन के बीच फूटने के लिए स्थान शेष रखते हुए नासिरा को उनकी मौलिक उपलब्धियों, प्रशंसा–नकार, स्वीकार, अस्वीकार और, अद्वितीयता के बीच एक अनंत संभावनाओं को अपने में समेटे एक बेचौन कलाकारश के रुप में देखना श्रेयस्कर होगा । रचनाकार की प्रतिबद्धता, संवेदनशील मन की छटपटाहट, स्थितियों को उसके मूल रूप में पकड़ने की लालसा यानी कुल मिलाकर अपने को पुनः पुनः तलाशने और तराशने की एक ईमानदार कोशिश के आलोक में नासिरा के कथा–लेखन की सूक्ष्मताओं, विविधताओं और व्यापकताओं को रेखांकित किया जा सकता है अथवा पहचाना जा सकता है ।

कृतित्व

साहित्यकार समाज का सर्वाधिक सहृदय प्राणी है। समाज में होने वाले अनुकूल प्रतिकूल परिवर्तनों का उसके हृदय पर सीधा प्रभाव पड़ता है। वह उन भावों से आन्दोलित होता है और काव्य रचना करता है। साहित्य का समाज से सीधा सम्बन्ध होने से उसमें जीवन का स्वरूप और सौन्दर्य पूर्णतः प्रत्यक्ष होता है। डॉ० शिव प्रसाद ने कहा है कि व्यक्तित्व कवि का वह गुण है जो अज्ञात रूप से उसके साहित्य की उन तमाम वस्तुओं के लिए जिम्मेदार है जो दूसरों के साहित्य में नहीं मिलती। नासिरा शर्मा जी को साहित्य विरासत में मिला है। उनका लेखन यूँ तो तब से ही शुरु हो जाता है जब पह तीसरी कक्षा की छात्रा थी। विद्यालय की कहानी लेखन प्रतियोगिता में उन्हें पुरस्कार मिला था। जब सातवीं कक्षा की छात्रा थी तो उनकी कहानी श्राजा भैया नामक

कहानी एक पत्रिका में प्रकाशित हुई। यह उनकी पहली प्रकाशित रचना थी। परन्तु उनकी विविध लेखन यात्रा सन् 1975 में सारिका के नवलेखन अंक में बुतखाना और मनोरमा पत्रिका में तकाजा कहानियों के प्रकाशित होने पर आरम्भ हुई। यानी जन्म के लगभग 28 वर्ष पश्चात् विधिवत् लेखन यात्रा शुरू हुई जो अनवरत जारी है। नासिरा जी की रचना यात्रा के सरोकारों का फलक अत्यन्त विस्तृत है। एक तरफ वह अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर कलम उठाती है तो दूसरी ओर ठेठ भारतीय जीवन का चित्रण करती है। उनके लेखन में जहाँ मानवीय इतिहास अपने को संजोता है, वही समाजशास्त्र पैने और तीखे प्रश्न उठाता है।

नासिरा जी ने अपने व्यक्तित्व के अनुरूप ही श्रेष्ठ रचनाएं हिन्दी साहित्य को प्रदान की है। विविध विधाओं में रचित साहित्य उनकी सर्वांगीण दृष्टि तथा श्रेष्ठ कृतित्त्व का स्वयं में ही पुष्ट प्रमाण है। हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में उनकी बलवती भूमिका रही है। उनकी अनुप्रेरक लेखनी से निम्नलिखित प्रमुख कृतियों का सृजन हुआ है।

संदर्भ

1. डॉ० स्वर्णलता विवेक स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, जयपुर, संस्करण 1975
2. डॉ० सुरेश सिन्हा हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1964
3. डॉ० सम्पूर्णनन्दरू समाजवाद, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, संस्करण 1960
4. डॉ० संसार चन्द्ररू संक्षिप्त बिहारी, रामचन्द्र एण्ड कम्पनी, दरियागंज, दिल्ली
5. डॉ० शेख मोहम्मद शाकिर शेख बशीर नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामयिक बोध,
6. अन्नपूर्णा प्रकाशन 127/1100 डब्ल्यून वन, सांकेत नगर, कानपुर – 208014, प्रथम संस्करण 2011
7. डॉ० हुक्मचन्द विविध बोध नये साक्षात्कार, राजपाल प्रराग प्रकाशन, इलाहबाद, 1976
8. डॉ० हरदयाल साहित्य और सामाजिक मूल्य, विभूति प्रकाशन, दिल्ली–32, प्रथम संस्करण 1985
9. नासिरा शर्मा राष्ट्र और मुसलमान, किताब घर प्रकाशन, 4855–56/24, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 संस्करण 2003
10. नासिरा शर्मा औरत के लिए औरत, सामाजिक प्रकाशन, 3320–21 जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–02 संस्करण 2011
11. नासिरा शर्मा शीर्ष कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, 4855–56/24, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 प्रथम संस्करण 2001
12. नीग्रो रू पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन Reading and Document, दिल्ली–110002, विश्वभारती पब्लिशिंग, 4378/4बी, अंसारी रोड़, दरियागंज
13. पं० जवाहर लाल नेहरुरू पब्लिक एडमिस्ट्रेशन, नई दिल्ली, 1990
14. बैजनाथ प्रसाद शुक्लरू भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में युग–चेतना, प्रेम प्रकाशन मन्दिर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1977